आकार IAS

Shaping Your Dreams

इतिहास एवं संस्कृति

मुख्य परीक्षा

प्राचीन भारत का इतिहास

प्रश्नपत्र-01 | भाग-01 | इकाई-01

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र - 01

प्राचीन भारत का इतिहास
ANCIENT INDIAN HISTORY

❒ भाग-1 : इतिहास एवं संस्कृति

इकाई-1

- **भारतीय इतिहास** - भारत का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, हड़प्पा सभ्यता से 10वीं शताब्दी ईस्वी तक।

❒ Part-1 : HISTORY AND CULTURE

UNIT-I

- **Indian History -** Political, Economical, Social and Cultural History of India from Harappa civilization to 10th Century A. D.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के प्रथम प्रश्न-पत्र के भाग-I की इकाई-I का **पूर्णांक 30** है

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई-2	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द या 01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द या 05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	हड़प्पा सभ्यता	1 – 24
02	वैदिक सभ्यता	25 – 46
03	**छठी सदी ई. पू. से तीसरी सदी ई. पू. तक का इतिहास :**	47 – 66
	महाकाव्य काल, सूत्र काल, महाजनपद काल, बौद्ध कालीन गणराज्य,	
	ईरानी आक्रमण एवं यूनानी आक्रमण	
04	**धार्मिक आन्दोलन :** जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म	67 – 87
05	मौर्य काल	88 – 117
06	मौर्योत्तर काल	118 – 135
07	गुप्त काल	136 – 159
08	**गुप्तोत्तर काल :**	160 – 163
	कन्नौज का मौखरि वंश, मालवा का शासक यशोधर्मन,	
	वल्लभी का मैत्रक वंश, थानेश्वर का पुष्यभूति वंश,	
	कन्नौज का शासक यशोवर्मन एवं कन्नौज का आयुध वंश	
09	त्रिपक्षीय संघर्ष	164 – 165
10	**बंगाल के राजवंश :** पाल वंश एवं सेन वंश	166 – 168
11	सामंतवाद	169 – 170
12	**पूर्व-मध्यकाल :**	171 – 188
	राजपूतों की उत्पत्ति, गुर्जर-प्रतिहार वंश, गहड़वाल वंश, परमार वंश,	
	चालुक्य या सोलंकी वंश, चौहान वंश, चंदेल वंश, कलचुरी वंश,	
	राजपूत कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं	
	सांस्कृतिक जीवन	
13	**कश्मीर के राजवंश :** कार्कोट वंश, उत्पल वंश एवं लोहार वंश	189 – 191
14	**दक्षिण भारत का इतिहास :**	192 – 214
	संगम युग, पल्लव वंश, बादामी के चालुक्य, राष्ट्रकूट वंश,	
	कल्याणी के चालुक्य, वेंगी के चालुक्य, चोल वंश, यादव वंश,	
	होयसल वंश, काकतीय वंश एवं पाण्ड्य वंश	
15	भारत का दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से सम्बन्ध	215 – 218

हड़प्पा सभ्यता : 2500-1800 ई. पू.

हड़प्पा सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल से सम्बन्धित है। 1921 ई. में रायबहादुर दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज ने भारत के इतिहास को 2000 वर्ष पीछे ढ़केल दिया। इससे पूर्व भारत के इतिहास का प्रारंभ वैदिक काल से माना जाता था, किन्तु हड़प्पा सभ्यता की खोज ने भारत के इतिहास को मेसोपोटामिया, मिस्र तथा चीन के इतिहास के समान ही प्राचीन एवं गौरवशाली बना दिया।

❐ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग

भारत में पुरातात्विक स्थलों की खोज, उत्खनन एवं संरक्षण का कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के द्वारा किया जाता है। वर्तमान में यह विभाग संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्य करता है और इसका मुख्यालय दिल्ली में है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना 1861 ई. में वायसराय लॉर्ड कैनिंग के समय सर अलेक्जेंडर कनिंघम के द्वारा की गई थी, इसलिए सर अलेक्जेंडर कनिंघम को 'भारतीय पुरातत्व का जन्मदाता' भी कहा जाता है। किन्तु शीघ्र ही इस विभाग को धन के अभाव के कारण बंद कर दिया गया था।

1871 ई. में वायसराय लॉर्ड मियो के द्वारा पुन: इस विभाग की स्थापना की गई तथा इसका प्रथम महासचिव सर अलेक्जेंडर कनिंघम को ही बनाया गया। 1904 ई. में वायसराय लॉर्ड कर्जन के समय 'प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम' पारित हुआ, जिसके अन्तर्गत 1906 ई. में जॉन मॉर्शल के प्रयासों से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को एक स्थायी विभाग बना दिया गया।

❐ खोज

सर्वप्रथम 1826 ई. में चार्ल्स मैंसन ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के साहीवाल (मोन्टगोमरी) जिले में स्थित एक गांव के टीले का अवलोकन किया था तथा यहाँ एक प्राचीन सभ्यता के दबे होने की बात लिखी थी। चार्ल्स मैंसन का मानना था कि इसी स्थान पर 326 ई. पू. में सिकन्दर और पोरस के मध्य युद्ध लड़ा गया था।

1853 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के सैन्य-अभियंता सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने इस टीले की यात्रा की, किन्तु वे इसके ऐतिहासिक महत्व को नहीं समझ सके। 1856 ई. में जॉन ब्रन्टन एवं विलियम ब्रन्टन ने कराची से लाहौर तक रेल पटरियां बिछाए जाने हेतु इस पुरातात्विक टीले से प्राप्त ईंटों का प्रयोग किया, किन्तु ब्रन्टन बंधु भी इसका महत्व नहीं समझ सके।

1872 ई. में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के नवनियुक्त प्रथम महानिदेशक सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने दूसरी बार इस टीले की यात्रा की। इस बार कनिंघम ने यहाँ से प्रस्तर उपकरण, मृदभाण्ड तथा वृषभ अंकित मुहर भी प्राप्त की, किन्तु उन्होंने वृषभ अंकित मुहर को विदेशी मुहर मानकर पुन: इस टीले के पुरातात्विक महत्व से मुँह मोड़ लिया।

1921 ई. में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के तृतीय अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देशन में रायबहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा नामक इस टीले की खोज की। 1922 ई. में जॉन मॉर्शल के निर्देशन में ही राखालदास बेनर्जी ने मोहनजोदड़ो नामक टीले की खोज की। 20 सितम्बर, 1924 ई. को The Illustrated London News में प्रकाशित जॉन मॉर्शल के लेख में हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो की खोज की घोषणा की गई।

❐ नामकरण

जॉन मार्शल ने इस सभ्यता को 'सिन्धु घाटी सभ्यता' नाम दिया था, क्योंकि इस सभ्यता से सम्बन्धित प्रारंभिक स्थलों की खोज सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे हुई थी। कुछ इतिहासकारों ने इस सभ्यता को 'सिन्धु-सरस्वती सभ्यता' नाम दिया है, क्योंकि इस सभ्यता के स्थलों का सर्वाधिक लगभग 80 प्रतिशत संकेन्द्रण घग्गर-हाकरा (प्राचीन सरस्वती) नदी के किनारे था।

गॉर्डन चाइल्ड ने इस सभ्यता को 'प्रथम नगरीय सभ्यता' कहा है तथा इसे 'प्रथम नगरीय क्रांति' की संज्ञा दी है। कुछ अन्य इतिहासकारों ने इस सभ्यता को 'काँस्ययुगीन सभ्यता' नाम दिया है, क्योंकि उनका मानना है कि इसी सभ्यता के लोगों ने सर्वप्रथम काँसे का उपयोग किया था।

उपर्युक्त सभी मतों में सर्वाधिक मान्य मत यह है कि इस सभ्यता का सबसे उपयुक्त नाम 'हड़प्पा सभ्यता' होना चाहिए, क्योंकि सबसे पहले हड़प्पा नामक स्थल को ही खोजा गया था।

❐ विस्तार

हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी तथा आकार त्रिभुजाकार था। यह सभ्यता पूर्व से पश्चिम 1600 किमी तथा उत्तर से दक्षिण 1400 किमी तक विस्तृत थी। इस सभ्यता का विस्तार उत्तर में चिनाब नदी के किनारे स्थित माण्डा (कश्मीर), दक्षिण में प्रवरा नदी के किनारे स्थित दायमाबाद (महाराष्ट्र), पश्चिम में दाश्क नदी के किनारे स्थित सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) तथा पूर्व में हिण्डन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर (उ. प्र.) तक था।

❐ काल निर्धारण

हड़प्पा सभ्यता के काल निर्धारण के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है। विभिन्न इतिहासकारों के मत निम्नानुसार हैं –

जॉन मार्शल	:	3250 – 2750 ई. पू.
अर्नेस्ट मैके	:	2800 – 2500 ई. पू.
माधोस्वरूप वत्स	:	3500 – 2700 ई. पू.
मार्टीमर व्हीलर	:	2500 – 1700 ई. पू.
कार्बन डेटिंग पद्धति	:	2350 – 1750 ई. पू.
आर. एस. शर्मा	:	2500 – 1800 ई. पू. (NCERT)

उपर्युक्त सभी मतों में सर्वाधिक मान्य मत यह है कि विकसित अर्थात् परिपक्व हड़प्पा सभ्यता का काल 2500 ई. पू. से 1800 ई. पू. तक रहा होगा।

❐ नगर नियोजन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका व्यवस्थित एवं सुनियोजित नगरीकरण था। इस सभ्यता के नगरों की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है –

1) हड़प्पा सभ्यता के नगर प्राय: 02 भागों में विभाजित थे – पश्चिमी टीला (दुर्ग टीला) तथा पूर्वी टीला (आवास क्षेत्र)। पश्चिमी टीला में दुर्ग स्थित होता था, जहाँ शासक वर्ग से सम्बन्धित लोग रहते थे, जबकि पूर्वी टीला में निचला शहर होता था, जहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी, कारीगर, श्रमिक आदि रहते थे।

2) सामान्यत: पश्चिमी टीला एक रक्षा प्राचीर से घिरा होता था, जबकि पूर्वी टीला नहीं। यद्यपि इसके कुछ अपवाद भी थे, जैसे –
   i) कालीबंगा में दुर्ग तथा नगर क्षेत्र दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरे थे।
   ii) लोथल तथा सुरकोटदा का संपूर्ण क्षेत्र एक ही रक्षा प्राचीर से घिरा था।
   iii) धौलावीरा का नगर तीन भागों में विभाजित था।
   iv) चन्हूदड़ो दुर्गीकृत नहीं था।

3) इस सभ्यता के भवन प्राय: द्विमंजला होते थे। नीचे की मंजिल से ऊपर जाने हेतु सीढ़ियों का निर्माण किया जाता था।

4) भवनों में प्राय: पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था, अपवाद – कालीबंगा। ईंटों की जुड़ाई इंग्लिश बॉण्ड स्टाईल में की जाती थी। ईंटों का आकार 4 : 2 : 1 था। भवनों के कोनों में L आकार की ईंटों का प्रयोग किया जाता था।

5) भवनों में ईंटों को प्राय: गीली मिट्टी के गारे से जोड़ा जाता था। नालियों की जुड़ाई में जिप्सम का तथा मोहनजोदड़ो के वृहदस्नानागार (महास्नानागार) में बिटुमिनस का प्रयोग हुआ था।

6) भवनों के स्तम्भ प्राय: वर्गाकार होते थे। फर्श प्राय: कच्चा होता था, अपवाद – कालीबंगा। कालीबंगा का एक फर्श अलंकृत ईंटों से बना है, जिस पर प्रतिच्छेदी वृत्त का अलंकरण है।

7) इस सभ्यता के प्राय: प्रत्येक घरों में स्नानागार, शौचालय एवं रसोई का निर्माण किया जाता था।

8) सड़कें शतरंज की विसात (चेसबोर्ड) की तरह व्यवस्थित होती थीं। मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण तथा दूसरे मार्ग पूरब से पश्चिम परस्पर समकोण पर काटते थे। सड़कें प्राय: कच्ची होती थीं, अपवाद – कालीबंगा।

9) सड़कों के किनारे ग्रिड पद्धति पर नाली की व्यवस्था थी, जिसमें कुड़ा-करकट एकत्रित करने के लिए जगह-जगह ढ़क्कनयुक्त मेनहोल बने थे।

10) इस सभ्यता के घरों के दरवाजे एवं खिड़कियां प्राय: मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गलियों की ओर खुलती थीं, अपवाद – लोथल।

11) घरों के दरवाजे किनारे की ओर बनाए जाते थे तथा खिड़कियों का निर्माण बहुत कम होता था। खिड़कियों का साक्ष्य केवल मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुआ है।

12) हड़प्पा सभ्यता में पक्की ईंटों से निर्मित सबसे बड़ी इमारत लोथल स्थित गोदीवाडा था, जबकि मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार था।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन अभूतपूर्व था, जो वर्तमान भारत की 'स्मार्ट सिटी योजना' के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता है।

❒ राजनीतिक जीवन

लगभग 13 लाख वर्ग किमी में फैली हड़प्पा सभ्यता 700 वर्षों तक निरंतर कायम रही। इस तथ्य से यह स्पष्ट है कि हड़प्पा सभ्यता में कोई न कोई शासन-प्रणाली अवश्य रही होगी, किन्तु हड़प्पा सभ्यता में शासन-प्रणाली का स्वरूप क्या था? यह विद्वानों के बीच विवाद का विषय है।

कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता के अलग-अलग नगरों में अलग-अलग राजनीतिक संगठन रहा होगा। किन्तु हमें हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों की बसावट, भवनों, सड़कों, मुहरों, मृदभाण्डों एवं लिपि में प्राय: एकरूपता दिखाई देती है। अत: ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों में अलग-अलग शासक नहीं, बल्कि सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता का कोई एक ही केन्द्रीय शासक रहा होगा।

हड़प्पा सभ्यता की राजनीतिक प्रणाली के सम्बन्ध में इतिहासकारों के अलग-अलग मत हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है –

1) मार्टीमर व्हीलर, स्टुअर्ड पिग्गट, ए. एल. बाशम तथा क्रेमर के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में मेसोपोटामिया तथा मिस्र के समान पुरोहितों का शासन था। स्टुअर्ट पिग्गट के अनुसार "हड़प्पाई राज्य एक केन्द्रीकृत साम्राज्य था, जो निरंकुश पुरोहित वर्ग द्वारा संचालित था।" स्टुअर्ट पिग्गट ने मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा को इस विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियां कहा है।
उसी प्रकार ए. एल. बाशम ने इस मत के समर्थन में मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रस्तर मूर्ति, सभागार तथा बलूचिस्तान से प्राप्त टीलों की ओर संकेत किया है। उन्होंने प्रस्तर मूर्ति को पुरोहित की मूर्ति, सभागार को पुरोहित आवास तथा टीलों को मंदिरों के रूप में बताने का प्रयास किया है। किन्तु आधुनिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो गया है कि हड़प्पा सभ्यता से मंदिरों के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं। अत: वर्तमान में इस मत को अधिक महत्व नहीं दिया जाता है।

2) हण्टर महोदय के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में जनतांत्रिक पद्धति रही होगी।

3) अर्नेस्ट मैके के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में जनप्रतिनिधियों का शासन रहा होगा।

4) पोसैल ने हड़प्पा सभ्यता में नगर परिषद् (नगर पालिका) का शासन स्वीकार किया है।

5) डॉ. आर. एस. शर्मा के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में वणिक वर्ग का शासन रहा होगा।

❖ निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी मतों में डॉ. आर. एस. शर्मा का मत सर्वाधिक तार्किक प्रतीत होता है। वस्तुत: हड़प्पा सभ्यता अपने नगरीकरण के लिए प्रसिद्ध थी तथा यहाँ के नगरीकरण का प्रमुख आधार उन्नत वाणिज्य-व्यापार था। अत: वाणिज्य-व्यापार की उन्नति में वणिक वर्ग की शासन में महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी। फिर भी हड़प्पा सभ्यता की राजनीतिक प्रणाली के सम्बन्ध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने हेतु अभी और भी पुरातात्विक खोजों एवं अनुसंधानों की आवश्यकता है।

❐ सामाजिक जीवन

यद्यपि साहित्यिक साक्ष्यों के अभाव में हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक जीवन के विषय में जानना अत्यधिक दुष्कर कार्य है। फिर भी उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक जीवन की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है -

1) हड़प्पाई समाज समतामूलक समाज था। समाज में छुआछूत एवं जाति-प्रथा के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

2) सम्पूर्ण समाज 04 वर्णों - विद्वान, योद्धा, व्यापारी एवं श्रमिक में विभाजित था।

3) हड़प्पाई समाज एक बहुप्रजातीय समाज था, जिसमें प्रोटोआस्ट्रेलायड, भू-मध्यसागरीय, मंगोलायड एवं अलपाइन प्रजाति के लोग निवास करते थे।

4) समाज में वर्गीय विभाजन के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। प्राय: शासक वर्ग पश्चिम दिशा में स्थित दुर्ग में, जबकि आम जनता पूर्व दिशा में स्थिति निचले शहर में निवास करती थी। लोथल से 13 कमरों का मकान प्राप्त हुआ है, जो कि संभवत: किसी धनी व्यापारी का रहा होगा। उसी प्रकार हड़प्पा से श्रमिक आवास के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

5) हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त स्त्री मृण्मूर्तियों की अत्यधिक संख्या के आधार पर माना जाता है कि हड़प्पाई समाज मातृसत्तात्मक समाज था। समाज में स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी। हड़प्पा सभ्यता में बाल-विवाह एवं पर्दा प्रथा के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

6) हड़प्पाई समाज उपयोगितावादी समाज था। समाज में प्रदर्शन व दिखावे की बजाय जरूरत एवं उपयोगिता को अधिक महत्व दिया जाता था। हड़प्पा सभ्यता के भवनों के दरवाजों व दीवारों में किसी प्रकार की कलाकारी दिखाई नहीं देती है। यद्यपि कुछ स्थलों से सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुएं, जैसे - चहून्दड़ो से लिपिस्टिक, इत्र व काजल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, किन्तु यह तथ्य मेसोपोटामियाई प्रभाव को ही दर्शाता है।

7) हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त लिपि एवं मानक माप-तौल के पैमाने के साक्ष्य इस बात की ओर संकेत करते हैं कि हड़प्पाई समाज सुशिक्षित समाज था।

8) हड़प्पाई समाज को एक शांति-प्रिय समाज के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इस सभ्यता से आक्रामक अस्त्र-शस्त्रों की प्राप्ति बहुत कम हुई है। साथ ही हड़प्पा सभ्यता में दुर्गों का अत्यधिक महत्व था। इससे यह प्रमाणित होता है कि इस सभ्यता के निवासी आक्रमण की बजाय सुरक्षा को अधिक महत्व देते थे।

9) हड़प्पा सभ्यता के निवासी शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों थे।

10) इस सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधन शिकार करना, मछली पकड़ना, पशु-पक्षियों को लड़ाना, चौपड़ व पांसा खेलना, ढोल व वीणा बजाना, नृत्य व संगीत का आनन्द लेना आदि थे।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि बहुवर्णीय, बहुवर्गीय एवं बहुप्रजातीय समाज होने के बावजूद भी हड़प्पाई समाज में वर्तमान समाज की कई बुराइयां एवं कुरूतियां, जैसे - छुआछूत, जाति-भेद, लिंग-भेद आदि का अभाव था। इस रूप में हड़प्पाई समाज वर्तमान समाज के समक्ष एक समतामूलक समाज का आदर्श प्रस्तुत करता है।

❐ आर्थिक जीवन

❖ कृषि

हड़प्पा सभ्यता नदियों के आस-पास विकसित हुई थी। अत: यहाँ की कृषि विकसित अवस्था में थी। कृषि अधिशेष को अन्नागारों में सुरक्षित रखा जाता था, जो कृषि के विकसित होने का प्रमाण है। अन्नागार के साक्ष्य मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा एवं लोथल से प्राप्त होते हैं।

कृषि कार्य में पत्थर, ताँबे तथा काँसे के उपकरणों का प्रयोग होता था। खेतों की जुताई प्राय: हल से की जाती थी। कालीबंगा से जुते हुए खेत का साक्ष्य तथा बनावली से मिट्टी के हल का साक्ष्य प्राप्त हुआ है। सिंचाई हेतु बांधों का निर्माण किया जाता था। मोहनजोदड़ो में निर्मित बांध सबसे विशाल था। मोहनजोदड़ो के घरों से कुंओं के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। नहर सिंचाई के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

हड़प्पा सभ्यता में सामान्यत: फसलें नवम्बर में बोई तथा अप्रैल में काटी जाती थीं। फसलों में गेहूं की 03, जौ की 02 प्रजाति के साक्ष्य मिले हैं। इसके अतिरिक्त मटर, राई, तिल, चना, सरसो, तरबूज, खरबूज आदि की खेती भी की जाती थी, किन्तु दाल एवं ईख के साक्ष्य नहीं मिले हैं। चावल की खेती गुजरात तथा संभवत: राजस्थान में होती थी। लोथल एवं रंगपुर से मृण्मूर्ति में धान की भूसी लिपटी मिली है। रागी की फसल उत्तर भारत के किसी भी स्थल से प्राप्त नहीं हुई है। मेहरगढ़ से कपास की कृषि के विश्व के प्राचीनतम् साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

❖ पशुपालन

हड़प्पा सभ्यता में पशुपालन का भी महत्व था। मुख्यत: कूबड़ वाले सांड, बिना कूबड़ वाले बैल, भैंस, गाय, भेड़, बकरी, कुत्ते, गधे, खच्चर, सुअर आदि पशुओं को पालतू बनाया जाता था। गुजरात के लोग हाथी पालते थे। लोथल से हाथी दाँत का स्केल प्राप्त हुआ है। कालीबंगा से ऊँट की हड्डियां, राणाघुंडई से घोड़े के दाँत, सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियां व मोहनजोदड़ो से घोड़े की मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। हड़प्पा सभ्यता में घोड़ा, शेर, बाघ आदि को पालतू नहीं बनाया जाता था।

❖ शिल्प एवं उद्योग

हड़प्पा सभ्यता में शिल्प एवं उद्योग विकसित अवस्था में थे। सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्त्र उद्योग था। सूती तथा ऊनी वस्त्रों का प्रचलन था। मोहनजोदड़ो से सूती वस्त्र का साक्ष्य प्राप्त होता है। शिल्प उद्योग में शंख, सीप, हाथी दाँत, गोमेद, फिरोजा, सेलखड़ी, मिट्टी, धातु तथा प्रस्तर की वस्तुएं बनाई जाती थीं। इनसे न केवल बर्तन एवं मृदभाण्ड, बल्कि मनके तथा मुहरें भी बनाई जाती थीं।

❖ वाणिज्य-व्यापार

हड़प्पा सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्यत: वाणिज्य-व्यापार पर आधारित थी। आंतरिक व्यापार हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नगरों एवं राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि के मध्य होता था, जबकि बाह्य व्यापार मुख्यत: मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान, फारस की खाड़ी आदि से होता था।

पुरातात्विक साक्ष्यों से भी बाह्य व्यापार की पुष्टि होती है। उदाहरणार्थ - हड़प्पाकालीन मुहरें मेसोपोटामिया तथा फारस की खाड़ी से प्राप्त हुई हैं। उसी प्रकार मोहनजोदड़ो से मेसोपोटामिया की एक बड़ी बेलनाकार मुहर तथा लोथल से फारस की खाड़ी की छोटी बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है।

मेसोपोटामिया स्थित अक्काड़ के प्रसिद्ध सम्राट सारगौन के अभिलेख (2350 ई. पू.) से भी बाह्य व्यापार की पुष्टि होती है। इस अभिलेख में उल्लेखित है कि मेसोपोटामिया का व्यापार दिलबन (बहरीन), माकन (मकरान अर्थात् बलूचिस्तान) तथा मेलूहा (हड़प्पा सभ्यता) से होता था।

बाह्य व्यापार में रोजनामचे की वस्तुओं की जगह मुख्यत: समृद्ध लोगों की विलासिता सम्बन्धी वस्तुओं को शामिल किया जाता था। हड़प्पा सभ्यता के किसी भी स्थल से मेसोपोटामिया की वस्तुओं का न पाया जाना इस बात का संकेत है कि मेसोपोटामिया से मुख्यत: कपड़े, ऊन, खुशबूदार तेल तथा चमड़े का आयात किया जाता था। चूंकि ये वस्तुएं जल्दी नष्ट हो जाती थीं, अत: ये वस्तुएं हड़प्पा सभ्यता में प्राप्त नहीं होती हैं।

❖ यातायात-संचार व्यवस्था

वाणिज्य-व्यापार स्थल तथा जल दोनों मार्गों से किया जाता था। आंतरिक व्यापार में मुख्यत: इक्कागाड़ी व बैलगाड़ी, जबकि बाह्य व्यापार में नावों का उपयोग किया जाता था। हड़प्पा व चन्हूदडो से काँसे की इक्कागाड़ी का साक्ष्य, लोथल से पक्की मिट्टी की नाव तथा मोहनजोदड़ो से मुहर में अंकित नाव का साक्ष्य प्राप्त होता है।

बाह्य व्यापार में बंदरगाहों का प्रमुख स्थान था। गुजरात स्थित लोथल, रंगपुर, प्रभासपाटन तथा बलूचिस्तान स्थित सुत्कांगेडोर, सुत्काकोह, बालाकोट, अल्लाहदिनो आदि महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। हड़प्पा सभ्यता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बंदरगाह लोथल था, जो एक ज्वारीय बंदरगाह था।

❖ माप-तौल के पैमाने

वाणिज्य-व्यापार में माप-तौल के पैमानों में सीप के बाँट तथा हाथी दाँत के स्केल का प्रयोग किया जाता था। मोहनजोदड़ो से सीप का बाँट तथा लोथल से हाथी दाँत का स्केल प्राप्त हुआ है। गणना में मुख्यत: 16 की संख्या तथा उसके गुणक का प्रयोग किया जाता था।

❖ मुद्रा व्यवस्था

हड़प्पा सभ्यता का वाणिज्य-व्यापार मुख्यत: वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित था। हालांकि इस सभ्यता में हमें अत्यधिक संख्या में मुहरों के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि वस्तु-विनिमय प्रणाली के अतिरिक्त छोटे स्तर पर मुहरों का प्रयोग मुद्राओं के रूप में भी किया जाता रहा होगा।

❖ नगरीकरण

हड़प्पा सभ्यता की अर्थव्यवस्था विकसित अवस्था में थी। यही कारण है कि इस सभ्यता के अन्तर्गत कई नगरों का विकास हुआ था, जैसे - मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, धौलावीरा, राखीगढ़ी, लोथल, कालीबंगा आदि।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार भारत की प्रथम नगरीकृत सभ्यता का प्रमुख आधार उसकी आर्थिक सम्पन्नता थी, जबकि इस आर्थिक सम्पन्नता का आधार उन्नत कृषि, पशुपालन एवं विकसित वाणिज्य-व्यापार था।

❐ धर्मिक जीवन

हड़प्पा सभ्यता मुख्यत: लौकिक सभ्यता थी, जिसमें यद्यपि धार्मिक तत्व उपस्थित था, परन्तु वर्चस्वशाली नहीं। हड़प्पा कालीन धर्म को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है -

1) यद्यपि कुछ विद्वानों ने हड़प्पा सभ्यता के टीलों की तुलना मेसोपोटामिया के जिगुरत (Ziggurat) से की है तथा इन टीलों को मंदिर माना है, किन्तु अधिकांश विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता से मंदिरों के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।
2) हड़प्पा सभ्यता में जल पूजा प्रचलित थी। मोहनजोदड़ो से वृहदस्नानागार का साक्ष्य प्राप्त हुआ है, जिससे स्नान के महत्व का पता चलता है।
3) इस सभ्यता में मातृदेवी की पूजा प्रचलित थी। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो से अनेक स्त्री मृण्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता में प्रथमत: मूर्ति पूजा के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
4) हड़प्पा सभ्यता में पृथ्वी पूजा की जाती थी। हड़प्पा से प्राप्त मुहर में एक स्त्री के गर्भ से पौधा प्रस्फुटित होता दिखाया गया है, जो संभवत: पृथ्वी पूजा (उर्वरता की देवी) का प्रमाण है।
5) हड़प्पा सभ्यता में पशुपति शिव की पूजा प्रचलित थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर में पशुपति शिव की आकृति अंकित है।
6) इस सभ्यता में पशु पूजा का भी प्रचलन था। एक शृंगी पशु तथा कूबड़ वाले सांड का अंकन मुहरों में प्राप्त होता है।
7) इस सभ्यता में लिंग पूजा तथा योनि पूजा की जाती थी। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त कुछ चिकने पत्थरों को लिंग तथा कुछ छिद्रयुक्त पत्थरों को योनि माना गया है।
8) हड़प्पा सभ्यता में अग्नि पूजा प्रचलित थी। कालीबंगा तथा लोथल से अग्निवेदिका के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
9) इस सभ्यता में पीपल, नीम तथा बबूल के पेड़ की पूजा के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
10) हड़प्पा सभ्यता के धर्म में प्रतीक पूजा का भी प्रचलन था। इस सभ्यता से स्वास्तिक के प्रतीक के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
11) हड़प्पा सभ्यता के धर्म में योग, ध्यान, दर्शन तथा चिंतन का महत्व था। मोहनजोदड़ो से एक योगी की ध्यानमग्न मुद्रा में प्रस्तर मूर्ति प्राप्त हुई है।
12) इस सभ्यता के धर्म में संभवत: देवदासी प्रथा प्रचलित थी। मोहनजोदड़ो से काँसे की नर्तकी की मूर्ति प्राप्त हुई है।
13) हड़प्पाई धर्म में भूत-प्रेत, भक्ति तथा पुनर्जन्म के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं।

❖ निष्कर्ष

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता के धर्म की कपितय विशेषताएं वर्तमान धर्म में भी दिखाई देती हैं। इस रूप में वर्तमान कालीन धर्म, हड़प्पा कालीन धर्म से प्रेरणा ले रहा है।

❐ अन्त्येष्टि

हड़प्पा सभ्यता में अन्त्येष्टि के 03 प्रकार प्रचलित थे - पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाह संस्कार। सबसे अधिक पूर्ण समाधिकरण या दाह संस्कार प्रचलित था।

कब्रिस्तान बस्ती से बाहर होते थे। लोथल से तीन युग्म समाधियां तथा कालीबंगा से एक युग्म समाधि के साक्ष्य मिले हैं। रोपण की एक कब्र में मालिक के साथ कुत्ते को भी दफनाया गया है। हड़प्पा के दक्षिण दिशा में कब्रिस्तान R-37 प्राप्त होता है, जिसमें देवदार लकड़ी से निर्मित ताबूत (काष्ठ शव पेटिका) मिला है। हड़प्पा से तीन कक्षों वाला कब्रिस्तान-H प्राप्त हुआ है, जो पूर्ण समाधिकरण का साक्ष्य है। मोहनजोदड़ो से कोई भी कब्रिस्तान प्राप्त नहीं हुआ है।

❐ लिपि

हड़प्पा सभ्यता की लिपि के साक्ष्य मुख्यत: मुहरों तथा मृदभाण्डों से प्राप्त हुए हैं। हड़प्पाई लिपि का सर्वप्रथम साक्ष्य 1853 ई. में प्राप्त हुआ था, जबकि 1923 ई. तक पूरी लिपि प्रकाश में आ गई थी। यह भाव चित्राक्षर लिपि (Pictograph) है, जिसे बाउस्ट्रोफेडन लिपि (Boustrophedon Script) भी कहते हैं, क्योंकि ऐसी लिपि पहले दायें से बायें तथा पुन: बायें से दायें लिखी जाती थी।

हड़प्पाई लिपि में 64 मूल चिह्न एवं 250 से 400 तक अक्षर हैं, जिनमें सर्वाधिक अंग्रेजी का U अक्षर तथा आकृति में सर्वाधिक मछली की आकृति प्राप्त हुई है। यद्यपि हड़प्पा सभ्यता की लिपि को रेवरेण्ड हैरस (फादर हेरास) ने बायें से दायें पढ़ने और उसे तमिल भाषा में अनुवादित करने का दावा किया है, किन्तु इस लिपि को आज तक पढ़ा नहीं जा सका है। विश्व में सर्वप्रथम कीलाकार लिपि (Cuneiform Script) का अविष्कार सुमेरियन सभ्यता के लोगों के द्वारा किया गया था।

❒ कला

हड़प्पा सभ्यता की कला के उदाहरण तत्कालीन स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत व नृत्य कला, मुहरों, मनकों तथा मृदभाण्डों के रूप में प्राप्त होते हैं।

❖ स्थापत्य कला

हड़प्पा सभ्यता के व्यवस्थित नगर, द्वि-मंजीला भवन, महास्नानागार, अन्नागार, गोदीवाड़ा, पक्की ईंटों, परस्पर समकोण पर काटती सड़कों, ग्रिड पद्धति पर निर्मित नालियों आदि से स्पष्ट है कि इस सभ्यता की स्थापत्य कला विकसित अवस्था में थी।

❖ मूर्तिकला

भारत में मूर्ति पूजा का प्रारंभ हड़प्पा काल से माना जाता है। हड़प्पा सभ्यता से अनेक मृण्मूर्तियां, प्रस्तर मूर्तियां तथा धातु मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

हड़प्पा सभ्यता में मृण्मूर्तियों का निर्माण चिकोटी विधि से किया जाता था। अधिकांश मृण्मूर्तियां हाथों से, जबकि कुछ सांचों से निर्मित होती थीं। सर्वाधिक मृण्मूर्तियां कूबड़ वाले सांड की प्राप्त होती हैं। पक्षियों में सर्वाधिक गौरिया की मृण्मूर्तियां मिली हैं। गाय की मृण्मूर्ति प्राप्त नहीं हुई है।

हड़प्पा सभ्यता में प्रस्तर मूर्तियां प्राय: खण्डित अवस्था में प्राप्त हुई हैं। मोहनजोदड़ो से सेलखड़ी से निर्मित शॉल ओढ़े ध्यानमग्न योगी का ऊपरी धड़ प्राप्त हुआ है।

हड़प्पा सभ्यता से ताँबे तथा काँसे की मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। मोहनजोदड़ो व चहून्दडो से काँसे की नग्न नर्तकी की मूर्ति मिली है। इस काल में धातु मूर्तियों का निर्माण द्रवी मोम विधि या लुप्त मोम विधि (Lost-Wax) से किया जाता था। काँसा व चाँदी का सर्वप्रथम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से ही प्राप्त होता है। इस सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था।

❖ चित्रकला

हड़प्पा सभ्यता के लोगों को चित्रकला का भी ज्ञान था, जिसकी पुष्टी मृदभाण्डों तथा मुहरों से प्राप्त चित्रों से होती है। चित्रों के अन्तर्गत मुख्यत: प्राकृतिक दृश्य तथा जीव-जन्तुओं के चित्र बनाए जाते थे।

❖ संगीत एवं नृत्य कला

हड़प्पा सभ्यता में संगीत एवं नृत्य कला के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। मोहनजोदड़ो से काँसे की नग्न नर्तकी की मूर्ति प्राप्त हुई है।

❖ मुहरें

हड़प्पा सभ्यता की कला में मुहरों का विशिष्ट महत्व था। अधिकांश मुहरें सेलखड़ी की प्राप्त हुई हैं। कुछ मुहरें कांचली, मिट्टी, चर्ट आदि की भी प्राप्त हुई हैं। मुहरों में मुख्यत: मनुष्य, पशु-पक्षियों तथा वृक्षों की आकृति उत्कीर्ण है।

❖ मनके

हड़प्पा सभ्यता में मनकों का इस्तेमाल आभूषण के रूप में किया जाता था। मनकों का निर्माण मुख्यत: मिट्टी, पत्थर एवं सीप से किया जाता था। लोथल तथा चहून्दडो से मनका बनाने के कारखाने का साक्ष्य मिला है।

❖ मृदभाण्ड

मृदभाण्ड चाक निर्मित तथा हाथ से बनाए जाते थे, जिन पर लाल रंग का प्रयोग किया जाता था तथा डिजाईन भी बना दी जाती थी। हड़प्पा सभ्यता से मुख्यत: लाल व काले मृदभाण्ड प्राप्त हुए हैं। लोथल से प्राप्त मृदभाण्ड में चोंच में मछली दबाए चिड़िया तथा पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी का अंकन है।

❖ निष्कर्ष

यद्यपि हड़प्पा सभ्यता के लोग आडम्बर एवं दिखावे की जगह उपयोगिता को महत्व देते थे, फिर भी इस काल में कला के विविध पक्षों का अभूतपूर्व विकास दिखाई देता है।

❐ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

हड़प्पा सभ्यता की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकों को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है –

1) हड़प्पा सभ्यता के व्यवस्थित नगर, द्वि-मंजीला भवन, महास्नानागार, अन्नागार, गोदीवाड़ा, पक्की ईंटों, परस्पर समकोण पर काटती सड़कों, ग्रिड पद्धति पर निर्मित नालियों आदि से स्पष्ट है कि इस सभ्यता में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नत अवस्था में थी।

2) हड़प्पा सभ्यता के लोगों को रसायन विज्ञान तथा धातु विज्ञान का बेहतर ज्ञान था। लोगों को धातु गलाने की तकनीक तथा मिश्र धातु, जैसे – काँसा बनाने की तकनीक का ज्ञान था।

3) हड़प्पा सभ्यता के लोगों में औषधि, शल्य चिकित्सा तथा गणित का भी उत्तम ज्ञान था। उदाहरणार्थ – मोहनजोदड़ो से हड्डी की सुईयां प्राप्त हुई हैं। कालीबंगा तथा लोथल से खोपड़ी की शल्य चिकित्सा के प्रमाण मिले हैं। वस्तुओं को गिनने हेतु 16 के गुणज का उपयोग किया जाता था।

4) इस सभ्यता के लोगों ने माप-तौल की प्रमाणिक प्रणाली विकसित कर ली थी। उदाहरणार्थ – मोहनजोदड़ो से सीप का बाँट तथा लोथल से हाथी दाँत का स्केल प्राप्त हुआ है।

5) हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त मुहरों, मनकों तथा मृदभाण्डों से भी स्पष्ट है कि इस सभ्यता के लोगों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उत्तम ज्ञान था।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के प्रारंभिक स्तर को इंगित करती है।

❐ उद्भव

1921 ई. से लेकर आज तक हड़प्पा सभ्यता के लगभग 1500 स्थलों की खोज हो चुकी है, किन्तु इतिहासकारों के मध्य आज भी इस सभ्यता के उद्भव का प्रश्न विवादास्पद बना हुआ है। इस विवाद हेतु निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं –

1) हड़प्पा सभ्यता की लिपि को पढ़ा न जाना।

2) पुरातात्विक साक्ष्यों तथा क्षैतिज उत्खनन की अपर्याप्तता।

3) अभी तक इस सभ्यता के जितने भी स्थलों की खोज हुई है, वे प्राय: अपनी विकसित अवस्था में थे। इस कारण इस सभ्यता के उद्भव के विषय में पर्याप्त साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के उद्भव के सम्बन्ध में मुख्यत: 02 प्रकार के सिद्धान्त प्रचलित हैं – विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त एवं देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त।

❖ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

1) सुमेरियन (मेसोपोटामिया) या आकस्मिक उत्पत्ति का सिद्धान्त

❖ देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

1) आर्य उत्पत्ति का सिद्धान्त

1) द्रविड़ उत्पत्ति का सिद्धान्त

2) ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पत्ति का सिद्धान्त

3) सोथी संस्कृति से उत्पत्ति का सिद्धान्त

नोट - ईरानी-बलूची संस्कृति एवं सोथी संस्कृति से उत्पत्ति के सिद्धान्त को क्रमिक उत्पत्ति का सिद्धान्त भी कहा जा सकता है।

❖ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

● सुमेरियन (मेसोपोटामिया) या आकस्मिक उत्पत्ति का सिद्धान्त

गार्डन चाइल्ड, मार्टिमर व्हीलर, क्रेमर, डी. डी. कौशाम्बी आदि इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता के उद्‌भव में विदेशी प्रभाव को स्वीकार करते हैं। इस मत के समर्थक विद्वानों के अनुसार सुमेरियन, मिस्र तथा हड़प्पा सभ्यता के जनक एक ही मूल के लोग थे। मेसोपोटामिया से ही एक जन समूह मिस्र होते हुए भारत आया तथा यहाँ की परिस्थितियों के अनुरूप एक नवीन नगरीकृत सभ्यता की नींव रखी। इस मत के समर्थक विद्वानों ने अपनी बात के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए हैं -

1) दोनों ही नगरीकृत सभ्यता थीं।

2) दोनों ही सभ्यता के लोग ईंट, मुहर, चाक्‌निर्मित मृदभाण्ड, अन्नागार तथा लिपि का प्रयोग करते थे।

3) दोनों ही सभ्यता से प्राप्त गढ़ी में समान संरचना की शहतीर का प्रयोग किया जाता था।

4) बलूचिस्तान से प्राप्त टीलों की संरचना मेसोपोटामिया से प्राप्त जिगुरत (मंदिर) के समान थी।

किन्तु सूक्ष्म अवलोकन के पश्चात् उपर्युक्त तर्कों की सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं, जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है -

1) दोनों ही सभ्यता के नगरीकरण में पर्याप्त अंतर था। हड़प्पा सभ्यता के नगर अधिक विकसित तथा व्यवस्थित थे।

2) हड़प्पा सभ्यता के भवनों में प्राय: आग में पकाई गई ईंटों का, जबकि सुमेरियन सभ्यता के भवनों में प्राय: धूप में सुखाई गई ईंटों का उपयोग किया गया था।

3) हड़प्पा सभ्यता में मुख्यत: वर्गाकार या आयताकार मुहरों का, जबकि सुमेरियन सभ्यता में मुख्यत: बेलनाकार मुहरों का प्रयोग किया जाता था।

4) दोनों ही सभ्यता से प्राप्त मृदभाण्डों एवं अन्नागारों के आकार-प्रकार एवं संरचना में पर्याप्त अंतर है।

5) हड़प्पा सभ्यता में चित्राक्षर लिपि का, जबकि सुमेरियन सभ्यता में कीलाकार लिपि का प्रयोग किया जाता था।

6) हड़प्पा सभ्यता में मंदिरों के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं, जबकि सुमेरियन सभ्यता में मंदिरों के साक्ष्य मिले हैं।

◆ निष्कर्ष

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हड़प्पा सभ्यता के उद्‌भव में सुमेरियन उत्पत्ति का सिद्धान्त तर्कत: स्वीकार नहीं किया जा सकता और न ही हड़प्पा सभ्यता को सुमेरियन सभ्यता के उपनिवेश के रूप में देखा जा सकता है।

❖ देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

● आर्य उत्पत्ति का सिद्धान्त

बी. बी. लाल, एस. आर. राव, जगपति जोशी, टी. एन. रामचन्द्रन आदि इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में आर्य उत्पत्ति के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। इस मत के समर्थक विद्वानों के अनुसार वैदिक आर्यों के द्वारा ही नगरीकृत हड़प्पा सभ्यता का विकास किया गया। इस मत के समर्थक विद्वानों ने अपनी बात के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए हैं –

1) दोनों ही सभ्यता का केन्द्रीय क्षेत्र सप्तसैंधव प्रदेश था।
2) दोनों ही सभ्यता में प्रकृति पूजा प्रचलित थी।
3) दोनों ही सभ्यता में घोड़ों एवं अग्निवेदिकाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
4) ऋग्वेद में प्रयुक्त 'हरियूपिया' शब्द की साम्यता हड़प्पा से मानी गई है।
5) आर्यों के देवता इन्द्र दुर्गों के देवता थे, हड़प्पा में भी दुर्गों का महत्व था।

यद्यपि हड़प्पा सभ्यता एवं वैदिक सभ्यता के बीच कुछ समानताएं दिखाई देती हैं, परन्तु दोनों के मध्य अनेक भिन्नताएं भी थीं –

1) हड़प्पा सभ्यता का केन्द्रीय क्षेत्र सप्तसैंधव प्रदेश नहीं, बल्कि सरस्वती नदी घाटी था।
2) हड़प्पा सभ्यता एक नगरीकृत सभ्यता थी, जबकि वैदिक सभ्यता एक ग्रामीण सभ्यता थी।
3) हड़प्पाई समाज मातृसत्तात्मक, जबकि वैदिक समाज पितृसत्तात्मक था।
4) वैदिक काल में लोहे के साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जबकि हड़प्पा सभ्यता में लोहे के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते।
5) वैदिक आर्यों को लिपि का ज्ञान नहीं था, जबकि हड़प्पा सभ्यता में लिपि प्रचलित थी।

◆ निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक आर्यों को हड़प्पा सभ्यता का निर्माता नहीं माना जा सकता है।

● द्रविड़ उत्पत्ति का सिद्धान्त

राखालदास बनर्जी, सुनीति कुमार चटर्जी आदि इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में द्रविड़ उत्पत्ति के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। इस मत के समर्थक विद्वानों ने अपनी बात के समर्थन में निम्नलिखित तर्क दिए हैं –

1) द्रविड़ों की ब्राहुई भाषा से ही हड़प्पा सभ्यता की लिपि का विकास हुआ था।
2) द्रविड़ों के समान ही हड़प्पाई लोगों में प्रकृति पूजा एवं पशुपति शिव की पूजा प्रचलित थी।
3) द्रविड़ों के समान ही हड़प्पाई लोगों में भू-मध्यसागरीय नस्ल की प्रधानता थी।
4) द्रविड़ों के समान ही हड़प्पाई लोगों में मातृसत्तात्मक व्यवस्था प्रचलित थी।

किन्तु गहराई से पर्यवेक्षण करने पर उपर्युक्त तर्कों की सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं, जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है –

1) द्रविड़ संस्कृति एवं हड़प्पा सभ्यता के स्वरूप में अंतर था। द्रविड़ संस्कृति का स्वरूप ग्रामीण था, जबकि हड़प्पा संस्कृति का स्वरूप नगरीय था।
2) द्रविड़ सभ्यता से उत्पत्ति के समर्थन में कोई भी पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है।

◆ निष्कर्ष

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में द्रविड़ उत्पत्ति के सिद्धान्त को भी तर्कत: स्वीकार नहीं किया जा सकता।

• ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पत्ति का सिद्धान्त

फेयर सर्विस, रोमिला थापर, स्टुअर्ट पिग्गट आदि इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता का उद्भव ईरानी-बलूची संस्कृति से स्वीकार करते हैं। ईरानी-बलूची संस्कृति के अन्तर्गत मुख्यत: 04 संस्कृतियों को शामिल किया जाता है - कुल्ली संस्कृति, झोब संस्कृति, आमरी-नाल संस्कृति एवं क्वेटा संस्कृति। इस मत के समर्थक विद्वानों के अनुसार वस्तुत: इन्हीं 04 ग्रामीण संस्कृतियों से हड़प्पा सभ्यता के नगरों का विकास हुआ था।

• सोथी संस्कृति से उत्पत्ति का सिद्धान्त

अमलानन्द घोष, डी. पी. अग्रवाल, आल्चिन दम्पत्ति आदि इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता का उद्भव सोथी संस्कृति से स्वीकार करते हैं। इस मत के समर्थक विद्वानों के अनुसार राजस्थान के बिकानेर व गंगानगर जिले की सोथी संस्कृति से ही हड़प्पा सभ्यता के नगरों का विकास हुआ था।

❖ समीक्षा

उपर्युक्त सभी मतों का विश्लेषण करने के उपरान्त हड़प्पा सभ्यता के उद्भव में देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त ही अधिक तार्किक प्रतीत होता है। पुरातात्विक खोजों से यह स्पष्ट हो गया है कि हड़प्पा सभ्यता से पूर्व बलूचिस्तान स्थित मेहरगढ़, सिन्ध स्थित आमरी व कोटदीची, हरियाणा स्थित बनावली व राखीगढ़ी, राजस्थान स्थित सोथी व कालीबंगा, गुजरात स्थित धौलावीरा आदि प्राक्-हड़प्पाई ग्रामीण संस्कृतियां अस्तित्व में थीं।

चूंकि ये संस्कृतियां नदी-घाटी के किनारे स्थित थीं, अत: यहाँ कृषि का निरंतर विकास हुआ होगा। सभ्यता के विकास के साथ-साथ यहाँ के निवासियों ने प्रस्तर तथा ताँबे के उपकरणों के अलावा काँसे के उपकरणों का प्रयोग भी कृषि क्षेत्र में प्रारंभ कर दिया होगा। इससे कृषि अधिशेष प्राप्त हुआ होगा। चूंकि इस क्षेत्र में कई खानाबदोश जातियां भी निवास करती थीं, जिनका सम्पर्क पश्चिमी एशिया के लोगों के साथ रहा होगा। अत: इन खानाबदोश जातियों के द्वारा कृषि अधिशेष का बाह्य व्यापार किया गया होगा। बाह्य व्यापार से आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ होगा। इस आर्थिक लाभ ने ही इन ग्रामीण संस्कृतियों के नगरीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया होगा।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जब ये प्राक् हड़प्पाई ग्रामीण संस्कृतियां हड़प्पाई संस्कृतियों में विकसित हो रही होंगी तो संभव है कि मेसोपोटामियाई तत्वों ने भी इसके स्वरूप में अपनी भूमिका निभाई हो, परन्तु मेसोपोटामियाई तत्वों का प्रभाव व्यापारिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के द्वारा ही संभव हुआ होगा।

❖ निष्कर्ष

इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के उद्भव से सम्बन्धित विभिन्न विचारों में सर्वाधिक तार्किक विचार देशी उत्पत्ति का सिद्धान्त प्रतीत होता है। हालांकि इस सम्बन्ध में किसी निश्चित निष्कर्ष में पहुंचने हेतु अभी और भी पुरातात्विक खोजों एवं अनुसंधानों की आवश्यकता है।

❐ पतन

लगभग 13 लाख वर्ग किमी क्षेत्र में फैली हड़प्पा सभ्यता 700 वर्षों तक कायम रही, किन्तु 1750 ई. पू. के आसपास इस सभ्यता के नगरीय स्वरूप का पतन हो गया। हड़प्पा सभ्यता के पतन के पीछे उत्तरदायी कारणों को लेकर इतिहासकारों में विवाद है। इस विवाद के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं -

1) हड़प्पा सभ्यता की लिपि को पढ़ा न जाना।
2) पुरातात्विक साक्ष्यों तथा क्षैतिज उत्खनन की अपर्याप्तता।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के संदर्भ में इतिहासकारों ने कई कारण बताए हैं, जिन्हें 02 वर्गों में विभाजित कर समझा जा सकता है -

1) आकस्मिक पतन का सिद्धान्त।
2) क्रमिक पतन का सिद्धान्त।

❖ आकस्मिक पतन का सिद्धान्त

हड़प्पा सभ्यता के आकस्मिक पतन सम्बन्धी सिद्धान्त में मुख्यत: आर्य-आक्रमण, बाढ़, नदी का मार्ग परिवर्तन, सूखा, जलप्लावन या विवर्तनीय विक्षोभ आदि कारणों को उत्तरदायी माना गया है।

● आर्य आक्रमण

गार्डन चाइल्ड, मॉर्टिमर व्हीलर जैसे इतिहासकारों ने हड़प्पा सभ्यता के पतन हेतु आर्य-आक्रमण को उत्तरदायी माना है। इस संदर्भ में मॉर्टिमर व्हीलर का कथन है कि "परिस्थितिजन्य साक्ष्यों के आधार पर इन्द्र दोषी ठहरता है।" यहाँ इन्द्र का प्रतिकात्मक अर्थ है - आर्यों की सेना।

इन इतिहासकारों का यह मानना है कि हड़प्पा सभ्यता के अंतिम चरण में आर्यों के आक्रमण के कारण हड़प्पा सभ्यता का आकस्मिक अंत हो गया। इस मत के समर्थक विद्वानों ने अपने मत के पक्ष में कुछ पुरातात्विक एवं साहित्यिक साक्ष्य भी प्रस्तुत किए हैं, जैसे -

1) मोहनजोदड़ो से 42 नरकंकाल (37 भारतीय व 05 पाकिस्तानी संग्रहलाय में) मिले हैं, जिन पर धारदार अस्त्रों के घाव हैं।
2) हड़प्पा स्थित कब्रिस्तान-H से ऐसा नरकंकाल प्राप्त हुआ है, जो परवर्ती हड़प्पा काल से सम्बन्धित है। उसे आक्रमणकारी का कंकाल माना गया है।
3) ऋग्वेद में इन्द्र को 'पुरंदर' (दुर्गों को नष्ट करने वाला) कहा गया है।
4) ऋग्वेद में इन्द्र को 'वृत्तासुरहन्ता' कहा गया है, जिसका अर्थ है - वृत्तासुर की हत्या कर जल को मुक्त कराने वाला। यहाँ इन्द्र को बांधों को नष्ट कर जल को मुक्त कराने का श्रेय दिया गया है।
5) ऋग्वेद में 'हरयूपिया' शब्द का उल्लेख है, जिसकी पहचान हड़प्पा के रूप में की गई है और इसे इन्द्र द्वारा नष्ट माना गया है।

इन समस्त तथ्यों के आधार पर यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि आर्यों के द्वारा ही मोहनजोदड़ो एवं बांधों को नष्ट किया गया था। चूंकि हड़प्पा सभ्यता की समृद्धि में मोहनजोदड़ो एवं बांधों का विशेष महत्व था। अत: इनके नष्ट होने के साथ ही संपूर्ण हड़प्पा सभ्यता का भी पतन हो गया।

किन्तु गहन विश्लेषण के उपरान्त इस मत की सीमाएं स्पष्ट हो जाती हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देखा जा सकता है -

1) मोहनजोदड़ो से प्राप्त केवल 42 नरकंकालों से संपूर्ण मोहनजोदड़ो के पतन को स्वीकार करना अतार्किक है। फिर आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि ये नरकंकाल अलग-अलग काल से सम्बन्धित थे।
2) संपूर्ण हड़प्पा सभ्यता का पतन लगभग 1750 ई. पू. तक हो चुका था, जबकि वैदिक आर्यों का आगमन 1500 ई. पू. में माना जाता है। इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के पतन तथा वैदिक आर्यों के आगमन में लगभग 250 वर्षों का अंतर था।
3) संभव है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन के उपरान्त कुछ दुर्ग एवं बांध शेष रह गये होंगे, जिन्हें बाद में आए आर्यों ने नष्ट किया होगा। यही कारण है कि आर्यों के देवता इन्द्र को 'पुरन्दर' एवं 'वृत्तासुरहन्ता' कहा गया है।

◆ निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता के पतन हेतु केवल आर्य-आक्रमण को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है। वास्तव में आर्य-आक्रमण की आवधारणा साम्राज्यवादी उद्देश्य से प्रेरित थी, जो कि प्रकारान्तर से ब्रिटिश-आक्रमण का औचित्य सिद्ध करती है।